

## Chapter 10

Question: What is experience?

प्रश्न : अनुभव क्या है ?

Krishnamurti: When you watch yourself, is it not an experience? When you put on a kurta, is that not an experience? When you watch the boat going down the river, is that not an experience? When you cry, when you laugh, when you are jealous, when you want to possess something and want to push others aside, is it not an experience? Living is experience. But we want to keep experiences which are pleasant and avoid experiences which are unpleasant. That is not life. Choosing between the pleasant and the unpleasant is not living. Life is everything from the dark clouds to the marvellous sunset; life is the whole thing which you can watch—the song of birds, the green fields and the barren earth, the fears, the laughter, the struggles, death. But, we generally view life differently; we say, 'This is life, that is not life,' 'This is beautiful, that is not beautiful,' 'I am going to hold to the beautiful and push away the ugly,' 'I am unhappy, I want happiness.' When we begin to choose, there is death.

If you really think about all this, you will see that when the mind chooses between that which is pleasant and that which is unpleasant, and holds on to one and discards the other, then deterioration takes place, then death comes in. But to see this whole process in movement, to be aware of it totally without any choice, stirs the mind and frees it from its self-enclosing activities of choice. A mind that is free from choice is wise, intelligent, capable of infinite depth.

Listen to all this. These are not mere words to be heard and then put aside.

कृष्णमूर्ति : जब आप खुद को देखते हैं तो क्या यह एक अनुभव नहीं है? जब आप कुर्ता पहनते हैं तो क्या यह एक अनुभव नहीं है? और जब आप नदी की धारा की दिशा में जा रही नाव को देख रहे होते हैं तो क्या वह भी एक अनुभव नहीं है? जब आप रोते-चीखते हैं, जब आप हँसते हैं, जब आप ईर्ष्या करते हैं, जब आप किसी चीज़ को कब्ज़ाना चाहते हैं और इसके लिए दूसरों को एक ओर धकेल देते हैं, क्या यह अनुभव नहीं होता? जीवन को जीना अनुभव है। परंतु हम उन अनुभवों को तो बनाए रखना चाहते हैं जो हमें सुखद लगते हैं और उन अनुभवों से बचना चाहते हैं जो हमें नापसंद होते हैं। यह जीवन नहीं है। सुखप्रद और दुखप्रद के बीच चुनाव करना जीना नहीं है। जीवन सब कुछ है—काले बादलों से ले कर भव्य सूर्यास्त तक; जीवन वह सब कुछ है जिसे आप देख सकते हैं : पक्षियों का गान, हरे खेत और बंजर धरती, भय, हँसी, संघर्ष, मृत्यु। पर हम जीवन के प्रति कुछ अलग दृष्टि रखते हैं; हम कहते हैं, 'जीवन यह है, वह जीवन नहीं है', 'यह सुंदर है और वह सुंदर नहीं है', 'सुंदर को तो मैं गले लगाऊंगा और कुरुप को दूर रखूंगा', 'मैं दुखी हूं और मुझे खुशी चाहिए'। जब हम चयन करने लगते हैं तो जीवन विदा हो जाता है।

यदि आप वास्तव में इस सब पर चिंतन करें तो आप देखेंगे कि जैसे ही मन सुखप्रद और दुखप्रद प्रतीत होने वाली चीज़ों के बीच चुनाव करने लगता है, पतन होने लगता है, मौत की शुरुआत हो जाती है। परंतु इस समूची प्रक्रिया को कार्य करते हुए देखना, बिना किसी चुनाव के इसके प्रति पूर्ण रूप से सजग होना मन को झकझोर देता है और चुनाव की संकीर्ण करने वाली गतिविधियों से मुक्त कर देता है। चयन से मुक्त मन मेधावी होता है, ऐसा मन प्रज्ञावान एवं असीम गहराई तक जाने की क्षमता रखता है।

यह सब ध्यानपूर्वक सुनें। ये कोरे शब्द नहीं हैं जिन्हें

## Chapter 10

Experiences of various kinds are impinging all the time on our minds, and our minds now are only capable of choice, choosing one experience and holding on to it and discarding another experience. When a mind retains an experience, from that experience it creates a tradition, and that tradition becomes choice and action. A mind that is merely caught in choice can never find out what truth is. So, it is only the mind that sees the whole movement of darkness and of light that is highly sensitive, intelligent. Only then can that which we call God come to be.

You have been listening for some days to all that has been said. Are you aware of what is taking place in you; how your mind thinks, how your mind watches things and people around? Are you watching more, seeing more, feeling more? Are you aware of all this? Do you understand what I am talking about? Are you aware of what is going on within yourself, in your mind, in your feelings? Do you ever watch the trees, the river? Do you see how you are looking at the river? What are the thoughts that come into your mind as you watch that river?

If you are not aware of all that is going on in your mind when you see something, then you will never know the operations of your mind, the workings of your mind, and without knowing that, you are not educated. You may have a few alphabets after your name, but that is not education. To be educated, you have to find out if your mind functions in tradition, if it is caught in the usual habitual routine. Do you do things because your parents want you to do them?

सुनकर भुला दिया जाए। अनेक प्रकार के अनुभव हमारे मन से लगातार टकराते रहते हैं और अभी जैसी स्थिति हमारी है उसमें हमारे मन बस चयन करना ही जानते हैं, एक अनुभव को चुन लेते हैं, उससे जुड़ जाते हैं और अन्य की अवहेलना करने लगते हैं। जब मन किसी अनुभव को पकड़ता है तो उस अनुभव से वह कोई परिपाठी या परंपरा का निर्माण कर लेता है और वही परिपाठी चयन तथा कर्म में बदल जाती है। जो मन केवल इस और उसमें चुनाव ही करता रहता है, सत्य को कभी नहीं जान सकता। अतः केवल वही मन जो अंधकार एवं प्रकाश की समूची गतिविधि को देखता है प्रखर रूप से संवेदनशील एवं मेधावी होता है। केवल तभी वह प्रकट हो सकता है जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

पिछले कुछ दिनों से आप यह सब सुन रहे हैं। क्या आपको इसका पता है कि आपके भीतर क्या-क्या हो रहा है, आपका मन किस प्रकार से सोच रहा है, अपने आसपास की तमाम चीज़ों और लोगों को किस तरह से देख रहा है? क्या आप पहले की अपेक्षा अधिक ध्यान से देखने लगे हैं, अधिक ध्यान से निरीक्षण करने लगे हैं, क्या आपकी अनुभूतियां पहले से अधिक प्रखर हुई हैं? क्या आप इस सब के प्रति सचेत हैं? क्या आप समझ पा रहे हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ? क्या आप इस बारे में जागरूक हैं कि आपके हृदय में, आपके मन में, आपकी भावनाओं में क्या चल रहा है? क्या आप कभी वृक्षों को देखते हैं, नदी को देखते हैं? क्या आपका इस ओर ध्यान जाता है कि नदी को आप किस तरह से देखा करते हैं? जिस समय आप नदी का अवलोकन कर रहे होते हैं उस समय आपके मन में कौन से विचार होते हैं?

जब आप किसी चीज़ को देख रहे होते हैं तब यदि आप सजग नहीं हैं कि आपके मन के भीतर उस समय क्या-क्या हो रहा है तो आप अपने मन की क्रियाविधि को कभी नहीं जान पाएंगे, और उसे जाने बिना आपको शिक्षित नहीं कहा जा सकता। अपने नाम के आगे कुछ उपाधियां लगा लेना शिक्षा नहीं है। शिक्षित होने के लिए आपको इसका पता लगाना होगा कि क्या आपका मन परंपरा की पटरी पर चलता है, क्या यह आदतों के ढर्रे पर चलने का आदी है? क्या आप बहुत से कार्य केवल इसलिए करते हैं कि आपके माता-पिता ऐसा चाहते हैं? क्या आप इसलिए जनेऊ पहनते हैं क्योंकि प्रथा के

## Chapter 10

Do you put on a sacred thread merely because that is the custom? Do you go to the temple to do puja because you have been told to, or because you have been meditating, or because you like it? Surely, all this indicates the operation of your mind, does it not? And without knowing that, how can you be educated?

The brain is an astounding thing if you watch it. There must be millions and millions of cells in it, and it must be a very complex mechanism. It must be most complex and concentrated because when I ask you a question, when I look at things, the mind goes through such a lot to produce an answer. You understand what I am talking about? If I ask you where you live, how quickly your mind operates! See the astounding rapidity of memory! If you are asked a question which you do not know, again look at what the mind goes through.

We are so rich in ourselves, but without knowing that richness, without knowing all its beauty, its complexity, we want every other richness—the richness of position, of office, of travel, of comfort, of knowledge, but these are all trivial riches compared to this thing. To know how the mind works and to go beyond it seems, to me, to be real education.

It has just been said that when we are confronted with something complex, when there is a problem, our mind becomes blank(sochne men asamarth). Does your mind become blank? Do you understand what I am asking you? Look, your mind is ceaselessly active, it is in constant movement. When you open your

अनुसार यह ज़रूरी है? क्या आप मंदिर में इसलिए पूजा करते हैं कि आपको ऐसा करने के लिए कहा गया है, या इसलिए कि क्योंकि आप ध्यान करते रहे हैं, या आपको ऐसा करना अच्छा लगता है? निश्चित ही यह सब आपके मन की कार्यव्यापार को दर्शाता है, है न? और उसे जाने बिना आप शिक्षित कैसे कहला सकते हैं?

यदि आप अपने मस्तिष्क का ध्यान से अवलोकन करें तो पाएंगे कि मस्तिष्क एक विस्मयकारी चीज़ है। इसमें करोड़ों-अरबों कोशिकाएं होती हैं और यह एक अत्यंत जटिल यंत्र-तंत्र है। यह शायद सर्वाधिक जटिल और सूक्ष्म संरचना है क्योंकि जब मैं आपसे प्रश्न पूछता हूं, जब मैं कई बातों पर गौर करता हूं तो उत्तर देने के प्रयास में मन को कितना अधिक काम करना पड़ता है। आप समझ रहे हैं न कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं? यदि मैं पूछूं कि आप कहां रहते हैं तो आपका मन कितनी शीघ्रता से कार्य करने लगता है! आप देख सकते हैं कि स्मृति की गति कैसी आश्चर्यजनक रूप से तीव्र होती है। और जब आपसे कोई ऐसा प्रश्न पूछा जाता है जिसका उत्तर आप नहीं जानते तो इसका भी अवलोकन करें कि तब आपका मन किस स्थिति से गुजरता है।

हमारे अपने भीतर इतनी समृद्धि है परंतु उस समृद्धि का, उसकी सुंदरता का, उसकी गृह्णता का हमें पता नहीं है इसलिए हम अन्य मामूली सम्पदाएं जैसे पद-प्रतिष्ठा, सरकारी ओहदा, यात्राएं, सुविधाएं और कुछ ज्ञान आदि चाहने लगते हैं जबकि आंतरिक समृद्धि की तुलना में ये सारी सम्पदाएं बिलकुल तुच्छ हैं। मन किस प्रकार से कार्य करता है इसे जानना और उससे ऊपर उठ जाना ही मुझे वास्तविक शिक्षा जान पड़ता है।

अभी-अभी यह कहा जा चुका है कि जब हमारा किसी जटिलता से सामना होता है, जब हमारे समक्ष ऐसी कोई समस्या होती है तो मन सोचने में असमर्थ, शून्य-सा हो जाता है। क्या आपका मन कभी इस प्रकार स्तब्ध होता है? आप समझ रहे हैं न कि मैं आपसे क्या पूछ रहा हूं? देखिए आपका मन सतत क्रियाशील रहता है, यह अबाध रूप से चलता रहता है। जब आप आंखें खोलते हैं तो अनेक प्रभावों से आपका सामना होता है और मन

## Chapter 10

eyes, you have various impressions, and the mind is receiving all these impressions—the light, the pictures, the windows, the green leaves, the movement of the animals and people. When you close your eyes, there is the inward movement of thought. So, the mind is constantly active; there is never a moment when it is still. That is the mind, not only at the superficial level, but also deep down. You know, after all, the Ganga is not just the surface water on which you see the ripples and the beauty of the sunshine; there is also the great depth of it, about 60 feet of water below the surface. The mind is not just the superficial expression of annoyance, of pleasure, of desires, of joy and frustration, but deep down, there is the whole mind, and all that is in movement all the time—asking questions, doubting, being frustrated, longing. When that movement is confronted with something which does not answer, it is shocked into paralysis for a second or two, and then it begins to act.

Have you not noticed when you see a beautiful thing, a beautiful mountain, a lovely river, a beautiful smile, how your mind becomes quiet? It is too much for the mind; for a second it is still, and then it begins to function. That is the case with most of us. Seeing that, is it possible for the mind to be still the whole way, not just at one level? Can your mind be totally still all the time, not through the shock of beauty or pain, not with any purpose—because the moment you have purpose, there is fear and envy behind it—but be totally still,(nischal) deep down and also on the surface? You can only find out, you cannot answer yes or no.

उन सारे प्रभावों को—प्रकाश को, चित्रों को, खिड़कियों को, हरे पत्तों को तथा पशु-पक्षियों, मनुष्यों आदि की गतिविधियों से उत्पन्न प्रभावों को ग्रहण करता रहता है। जब आप आँखें बंद कर लेते हैं तो आपका सामना विचार की अंतरिक गतिविधि से होता है। इस तरह मन लगातार कार्यरत रहता है, ऐसा कोई क्षण नहीं होता जब यह ठहर जाता हो। यही मन है—केवल बाहरी सतह पर ही नहीं बल्कि भीतर भी बहुत गहराई तक। आप जानते ही हैं कि गंगा जल की सतह भर नहीं है जिस पर उठती-गिरती लहरें और सूर्य की रोशनी का सौंदर्य आप देखा करते हैं—इसमें बहुत गहराई भी है, उस सतह से लगभग साठ फुट नीचे तक जल की गहराई है। मन भी रोष, खुशी, कामना, हर्ष और विषाद की सतही अभिव्यक्ति भर नहीं होता, बल्कि गहरे में मन की एक समग्रता होती है, और यह सब उसमें सतत गतिशील रहता है—प्रश्न पूछना, संदेह करना, कुठाग्रस्त होना, लालसाएं होना इत्यादि। जब वह गतिशीलता किसी ऐसी चीज़ के संपर्क में आती है, जिससे उसे कोई प्रत्युत्तर नहीं मिलता तो इसे पल-दो-पल के लिए स्तब्ध कर देने वाला एक आघात लगता है, पर फिर यह सक्रिय हो उठती है।

जब आप कोई सुंदर वस्तु देखते हैं, किसी सुंदर पर्वत को, किसी सुंदर नदी को, किसी सुंदर मुस्कान को देखते हैं तो क्या आपका ध्यान कभी इस पर नहीं गया कि तब आपका मन कितना शांत हो जाता है? क्योंकि उस पल में कुछ समझ पाना मन की क्षमता से बाहर होता है, इसलिए यह पल भर के लिए ठिक जाता है और उसके बाद फिर कार्य करने लगता है। हममें से अधिकांश के साथ ऐसा होता है। यह देख लेने के बाद, क्या मन के लिए ऐसा करना संभव है कि पूरे समय तक, एक ही स्तर पर नहीं, बल्कि पूर्णरूप से यह शांत रहे? क्या आपका मन सौंदर्य या पीड़ा के किसी आघात के कारण नहीं, किसी प्रयोजन से नहीं, वरन् स्वाभाविक रूप से सारे समय पूर्ण रूप से मौन रह सकता है—बिना किसी उद्देश्य के क्योंकि जैसे ही आपके पास कोई उद्देश्य होगा भय और ईर्ष्या भी उसके साथ हो लेंगे। अतः क्या किसी प्रयोजन के बिना भी आपका मन इस तरह निरांत निश्चल हो सकता है कि यह गहराई के तल पर, और सतह पर भी शांत

## Chapter 10

हो? आप बस इसका पता लगा सकते हैं, हां अथवा न नहीं कह सकते हैं।

There is real freedom when the mind right through knows its activities, its shades, its lights, its movements, its deliberations, its elations. The very knowing by the mind of all its movements from deep down to the top, the very seeing of it all, is the stilling of the mind. All this has to be very intelligently thought out, watched for, unearthed, so that you know the whole thing that is the mind, so that you are aware of the whole process; then only is the mind really still.

Question: What is jealousy?

Krishnamurti: Don't you know what jealousy is? When you have a toy and the other person has a bigger toy, don't you want that bigger toy? When you have a small bicycle and you see a big beautiful bicycle, don't you want that? That is jealousy. On that jealousy, people live, exploit, multiply.

Please, will the teacher who is responsible for that boy's education explain this to him. Please take the time and the trouble to point out what jealousy is—if you understand what jealousy is yourself.

Jealousy begins in a small way and then one gets drawn into a stream of action, clothed under so many names. We all know jealousy. That little boy wants to know what jealousy is. Do not say it is wrong or right, do not condemn it. Do not tell him it is not desirable to be jealous, that jealousy is ugly, evil. What is evil is your condemnation of it, not jealousy itself. Please explain to him

वास्तविक स्वतंत्रता तब होती है जब मन अपनी गतिविधियों को, अपने अंधेरे और उजले पहलुओं को, क्रियाकलापों को, विकल्पों को, अपनी खुशियों को भलीभांति जानने लगता है। भीतर की गहराइयों से लेकर ऊपरी सतह तक की अपनी समस्त गतिविधियों को मन जब देख-जान लेता है, तो ऐसा करना ही इसे शांत कर देता है। इस सब के बारे में अत्यंत विवेक से चिंतन किया जाना चाहिए, धैर्यपूर्वक इसे देखा जाना चाहिए और इसकी खोजबीन की जानी चाहिए, ताकि आप मन को समग्र रूप से, पूर्ण रूप से जान लें, ताकि आपको इस संपूर्ण प्रक्रिया के प्रति सजग हो सकें, केवल तभी मन वस्तुतः मौन होता है।

प्रश्न : ईर्ष्या क्या है?

कृष्णमूर्ति : क्या आप नहीं जानते कि ईर्ष्या क्या है? जब आपके पास कोई खिलौना होता है पर किसी दूसरे के पास इससे भी बड़ा खिलौना होता है तो क्या आप भी बड़ा खिलौना नहीं चाहते? जब आपके पास एक छोटी सी साइकिल होती है और आप कहीं एक बड़ी और अधिक सुंदर साइकिल देख लेते हैं तो क्या आप उसे पाना नहीं चाहते हैं? यही ईर्ष्या है। लोग इस ईर्ष्या में ही जीते हैं, इसके चलते एक-दूसरे का शोषण करते हैं और फलते-फूलते हैं।

इस बालक की शिक्षा में लगे शिक्षक कृपया ध्यान देंगे और उसे इस बारे में समझाएंगे? कृपया थोड़ा समय निकालें और उसे यह समझाने का कष्ट करें कि ईर्ष्या क्या है—यदि आप स्वयं यह समझते हों।

ईर्ष्या किसी छोटे से कारण से शुरू होती है और फिर व्यक्ति विभिन्न नामों के आवरण में इसे छिपाकर अनेक तरह के कार्यों में उलझ जाता है। हम सभी ईर्ष्या करना जानते हैं। यह छोटा बालक जानना चाहता है कि ईर्ष्या क्या है। कृपया यह न कहें कि ईर्ष्या करना ठीक है कि गलत है, इसकी निंदा न करें। उसे यह न कहें कि ईर्ष्या करना ठीक नहीं है, ईर्ष्या गंदी, बुरी चीज़ है। यदि कुछ बुरा है तो वह है ईर्ष्या की निंदा, न कि ईर्ष्या। कृपया उसे ईर्ष्या का समस्त कार्य-व्यवहार समझाएं, यह कैसे उठती है, हमारा समाज किस प्रकार से ईर्ष्या की

## Chapter 10

the whole business of jealousy, how it arises, how our society is based on jealousy, how our instincts are based on it, how it shapes all our actions. You do not condemn a map, you do not say the road should not go that way. You do not say that the villages should be here and not there; the villages are there. Similarly you must look at jealousy and not try to push it aside, not try to transform it, not try to make it idealistic.

Jealousy is jealousy. You cannot make it into something else. But if you can look at it, understand it, then it gets transformed; you do not have to do a thing about it. If you can explain this deeply to every boy and girl, we shall produce quite a different generation.

Question: Why do we want to show off and to assure ourselves that we are something?

Krishnamurti: Why do you want to assure yourself that you are something? Why do I want to be sure that I am something?

You know, the maharajah wants to show that he is something. He shows off his cars, his titles, his position, his riches. The professor, the pundit, assures himself that he is somebody through his knowledge. You also want to show that you are somebody in your class with your friends. It is the same thing, on a small scale or a big scale. Why do we do that? Please listen to what I am saying.

If you are inwardly rich, there is no need to show off because that in itself is beautiful. Because inwardly we fear we have nothing, we put on lots of airs. The sannyasi does it, the

नींव पर टिका हुआ है, कैसे हमारी मौलिक प्रवृत्तियां इस पर आश्रित हैं और यह हमारे सारे कृत्यों को किस प्रकार ढालती है। आप किसी नक्शे की निंदा नहीं करते, आप यह नहीं कहते कि इस सङ्क को इस तरफ से नहीं गुजरना चाहिए। आप यह नहीं कहते कि गांवों को यहां पर नहीं वहां पर होना चाहिए। इसी तरह से आपको चाहिए कि ईर्ष्या का अवलोकन करें न कि उसकी अवहेलना--उसे रूपांतरित करने का प्रयास न करें, उसे किसी आदर्श में बदलने की चेष्टा नहीं करें।

ईर्ष्या तो ईर्ष्या ही है। इसे बदलकर आप किसी नयी वस्तु का रूप नहीं दे सकते हैं। परंतु यदि आप इसे ध्यान से देखें, इसे समझें, तो यह रूपांतरित हो जाता है, यह अपने आप रूपांतरित हो जाएगा और आपको इसके लिए कुछ नहीं करना होगा। यदि आप प्रत्येक बालक और बालिका को गहराई से इस बारे में समझा पाएं, तो एक ऐसी पीढ़ी तैयार हो सकेगी जो बिलकुल भिन्न होगी।

प्रश्न : हम किसी भी तरह का दिखावा करना और स्वयं को यह भरोसा दिलाना क्यों चाहते हैं कि हम कुछ खास हैं?

कृष्णमूर्ति : आप अपने आप को यह भरोसा दिलाना क्यों चाहते हैं कि आप कुछ हैं? मैं इस बारे में सुनिश्चित होना क्यों चाहता हूं कि मैं कुछ हूं?

आप जानते ही हैं कि कोई भी महाराजा ऐसा प्रदर्शित करना चाहता है कि वह विशिष्ट है। वह गौरवपूर्वक अपनी कारों को, अपनी उपाधियों को, अपनी प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य को प्रदर्शित करना चाहता है। एक प्रोफेसर, पंडित स्वयं को अपने ज्ञान के सहारे यह भरोसा दिलाता है कि वह कोई है। आप भी अपने मित्रों के बीच कक्षा में यह दिखाना चाहते हैं कि आप भी कुछ हैं। चाहे छोटे पैमाने पर हो या बड़े पैमाने पर, पर है यह एक ही बात। हम ऐसा क्यों करते हैं? मैं जो कहने जा रहा हूं कृपया उसे ध्यान देकर सुनें।

यदि आप अपने भीतर से समृद्ध हैं तो किसी भी प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उसका अपना ही सौंदर्य है। पर हमारे भीतर यह डर होता है कि हम कुछ नहीं हैं, इसलिए हम कुछ होने का

## Chapter 10

prime ministers and the rich men do it. Strip them of their power, their money, their position—they are dull, stupid, empty. So, a person who wants to show off, who wants to be assured that he is somebody, or who tells himself that he is somebody, is really very empty. You know, it is like a drum; you keep on beating it to make a noise, and the noise is the showing off, the assurance that you are somebody. But the drum in itself has no noise, it has to be beaten to produce the noise; in itself it is empty. In yourself you are empty, dull, uncreative; and because you are nothing, you want to assure yourself that you are somebody. That is the movement of envy. But if you say, 'Yes, I am empty, I am poor,' and from there begin not to change but to understand it, to go into it, to delve deeply into it, then you will find riches that are incorruptible. In that movement, there is no assurance that you are somebody because you are nobody. The man who is really nobody, who is nothing in himself, is the only truly happy man.

Question: You have been talking all these days with the idea of bringing about a change in our lives. If you want us to think differently, how is it different from the attitude we have been having so far, to be something which we are not today?

Krishnamurti: The question needs to be made simpler. Your question is: You want us to change and in what way is that different from our own desire to change in the old pattern?

Do I want you to change? If you change because I want you to

नाटक करने लगते हैं। संन्यासी ऐसा करता है, प्रधानमंत्री और धनवान लोग भी ऐसा करते हैं। उनसे उनकी सत्ता, उनका धन, उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा छीन लें तो वे बुद्धिहीन, मूढ़ और खोखले हो जाएंगे। इसलिए जो व्यक्ति दिखावा करना चाहता है, या जो यह सुनिश्चित करना चाहता है कि वह कुछ है, अथवा जो अपने आप से यह कहता है कि वह कोई खास व्यक्ति है वास्तव में अत्यंत खोखला है। यह ढोल पीटने जैसा है, आप ढोल को इसलिए पीटते हैं कि उससे शोर हो और शोर मचाने का मतलब है प्रदर्शन करना, ढिंढोरा पीटना, यह भरोसा पैदा करना कि आप कोई हैं। परंतु ढोल की अपनी कोई आवाज़ नहीं होती, आवाज़ पैदा करने के लिए इसे पीटा जाता है, अपने आप में यह खोखला होता है। अपने आपमें आप खोखले हैं, मंद हैं, लकीर के फकीर हैं और चूंकि आप कुछ भी नहीं हैं, इसलिए अपने आपको भरोसा दिलाना चाहते हैं कि आप कुछ हैं। ईर्ष्या-द्वेष की यही गतिविधि है। लेकिन यदि आप कहते हैं, “हाँ मैं खोखला हूं, मेरे पास कुछ नहीं है” और स्थिति को बदलने की चेष्टा नहीं बल्कि उसे समझने का प्रयास करते हैं, उसका अध्ययन करते हैं, उसकी गहराई तक जाते हैं तो वे संपदाएं आपके हाथ लगती हैं जिन्हें भ्रष्ट नहीं किया जा सकता। ऐसा करना आपको इस बात का कोई भरोसा नहीं दिलाएगा कि आप विशिष्ट हैं क्योंकि आप तो कोई हैं ही नहीं। जो मनुष्य वास्तव में कोई नहीं है, जो अपने आपमें कुछ नहीं है केवल वही सच में सुखी है।

प्रश्न : इन बीते दिनों में इस भावना से आप हमसे चर्चाएं करते रहे हैं कि हमारे जीवन में कोई परिवर्तन आ सके। यदि आप यह चाहते हैं कि हम कुछ भिन्न ढंग से विचार करें, तो हम अभी तक जिस ढंग से विचार करते आ रहे हैं उससे वह किस प्रकार से भिन्न है? आज जो हम नहीं हैं वह हो पाने के हमारे विचार से वह किस प्रकार भिन्न है?

कृष्णमूर्ति : प्रश्न को थोड़ा सरल बनाया जाए। आपका प्रश्न है : आप चाहते हैं कि हमें बदलाव आए, यह बदलाव उससे किस प्रकार से भिन्न होगा, जिसे लाने की इच्छा हम पुराने ढांचे में सोचते हुए करते हैं?

क्या मैं आपमें बदलाव लाना चाहता हूं? यदि आपमें बदलाव इसलिए आता है क्योंकि मैं आपमें बदलाव

## Chapter 10

change, then that change is the movement of envy, of fear, of reward and punishment. That is, you are this, and you want to change into that because you are being persuaded by me to change into that—which is the movement of jealousy, of fear, of envy. If I realize what I am, just realize without any desire to change, without any desire to condemn, if I can just be that, just see that, then from that there is a totally different action. But to bring about that totally different action, the other movement—the movement of envy, of fear, of condemnation, of comparison—must cease. Is that clear?

Question: At present, we are not thinking in the way that you are thinking. You are talking to us with a view to making us see your way of thinking. Is that not so? Is that not a change that you would like us to bring about in ourselves? There is only a subtle difference between the two. We are not thinking in the way you are thinking because we do not take life in the way you are taking it.

Krishnamurti: The way we generally think is the way in which we have been brought up—in that pattern, in that groove, in that framework. Now, when you realize your thinking is conditioned, is there not a breaking up of that conditioning? When I realize that I am thinking in terms of Communism or Catholicism or Hinduism, is there not a breaking away from that? That is all I am talking about. There is a breaking away, which is quite a different movement from habitual thinking—in which there is no change.

When we talk of change, we mean we must change from this to that.

लाना चाहता हूं तो वैसा बदलाव ईर्ष्या की, भय की, पुरुस्कार की और दंड की गतिविधि ही होगा। क्योंकि आप ‘यह’ हैं और ‘वह’ में आप इसलिए बदलना चाहते हैं क्योंकि ‘वह’ में बदलने के लिए मैं आपको बाध्य कर रहा हूं—जो वस्तुतः ईर्ष्या, भय एवं द्वेष की ही क्रिया है। यदि मुझे यह एहसास होता है कि मैं क्या हूं, सिर्फ एहसास होता है, बदलाव की किसी इच्छा के बिना, निंदा के किसी भाव के बिना, यदि मैं इसे प्रत्यक्ष रूप से जान लेता हूं, देख लेता हूं—तब एक पूर्णतः भिन्न गतिविधि शुरू हो जाती है। किंतु ऐसी पूर्णतः भिन्न गतिविधि शुरू हो सके इसके लिए यह ज़रूरी है कि ईर्ष्या की, भय की, निंदा करने की और तुलना करने की गतिविधि का अंत हो जाए। क्या यह स्पष्ट हुआ?

प्रश्न : अभी तो स्थिति यह कि हम उस तरीके से विचार नहीं कर पाते जिस तरीके से आप करते हैं। आप जिस तरीके से चिंतन करते हैं उसे हम समझ सकें इसलिए, हमें सहायता करने की दृष्टि से, आप हमसे चर्चा कर रहे हैं। ऐसा ही है न? क्या यही वह बदलाव नहीं है जिसे हम स्वयं ही अपने भीतर लाएं ऐसा आप चाहेंगे? आपके और हमारे चिंतन में कोई सूक्ष्म अंतर है। हम आपके ढंग से चिंतन इसलिए नहीं कर पाते हैं क्योंकि जीवन को आप जिस प्रकार से देखते हैं हम उसे उस प्रकार से नहीं देख पाते।

कृष्णमूर्ति : विचार करने का हमारा तरीका प्रायः इस पर निर्भर करता है कि हम किन परिस्थितियों में पले-बढ़े हैं—हमारा विचार करने का तरीका उसी ढांचे के अनुरूप, उसी पटरी पर, उसी लीक पर हुआ करता है। अब, जैसे ही आपका ध्यान इस पर जाता है कि आपका सोचना-विचारना संस्कारग्रस्त है वैसे ही क्या आपकी वह संस्कारग्रस्तता टूटने नहीं लगती है? जैसे ही मुझे यह महसूस होता है कि मैं कम्युनिस्ट या कैथोलिक या हिंदू विचारधारा के ढांचे में सोचता हूं, क्या तुरंत ही मैं उससे बाहर नहीं निकलने लगता? मैं बस यही कह रहा हूं। एक ऐसा बाहर निकलना होता है जो अभ्यासगत सोच-विचार से नितांत भिन्न होता है—जो कि बदलाव नहीं होता।

जब हम बदलाव की बात करते हैं तो हमारा आशय

## Chapter 10

When we change from 'this' to 'that,' 'that' is already the known; therefore, it is not change. When I change from greed to nongreed, the nongreed is my formulation, is my idea. Therefore, I already know the state of nongreed. Therefore when I say I must change greed into nongreed, the movement is still within the field of the known, from one known to another known. Therefore, it is not change at all. Do you see that?

Please listen, all of you. It is not that gentleman alone who is asking the question, but all of us are involved in this. When we talk about change, about revolution, changing from 'this' to 'that,' 'that' is the state we already know; therefore, it is not change. When I change from Hinduism to Catholicism, I know what Catholicism is. It is a thing I want. I do not like this and I like that. That which I like is already what I know. Therefore, it is the same thing only in a different form.

What I am talking about is not change but the cessation of the desire to change, which does not mean I am content with what is. There must be the cessation of the desire to change from the known to what I think is the unknown, but which is really the known. If that movement ceases, then there is a totally different activity.

January 15, 1954

यह होता है कि हमें 'यह' से 'वह' में बदलना है। जब हम 'यह' से 'वह' में परिवर्तित होते हैं तो 'वह' तो पहले से ही ज्ञात होता है; इसलिए यह हकीकत में बदलाव नहीं होता। जब मैं लोभ को निर्लोभ में बदलता हूँ तो यह निर्लोभ मेरे मन की ही रचना होती है, मेरी ही कल्पना होती है। अतः निर्लोभ की अवस्था को मैं पहले से ही जानता हूँ। इसलिए जब मैं कहता हूँ कि मुझे लोभ को निर्लोभ में बदलना होगा तो बदलाव लाने की यह गतिविधि भी ज्ञात के क्षेत्र में होती है, अर्थात् ज्ञात से ज्ञात तक ही सीमित रहती है। इसलिए यह बदलाव कदापि नहीं है। क्या आप इसे देख सकते हैं?

कृपया सुनें—आप सभी ध्यानपूर्वक सुनें। वे सज्जन जिन्होंने प्रश्न पूछा था, वे ही नहीं बल्कि इससे आप सबका संबंध है। जब हम बदलाव की बातें करते हैं, जब हम क्रांति की बातें करते हैं, 'यह' को 'वह' में बदलने की बात करते हैं तो 'वह' एक ऐसी दशा होती है जिसे हम पहले से ही जानते होते हैं, अतएव वह बदलाव नहीं है। जब मैं हिंदू मन से कैथोलिक मन में परिवर्तित होता हूँ तो मुझे यह पहले से ही मालूम होता है कि कैथोलिक मन क्या है। इस चीज़ को मैं पाना चाहता हूँ। मुझे यह चीज़ पसंद नहीं है और मैं 'वह' पाना चाहता हूँ। जिसे मैं पसंद करता हूँ उसे मैं जानता ही हूँ। इस प्रकार से वह पहले से जानी हुई चीज़ होती है जो एक नये रूप में मुझे मिलती है।

मैं बदलने की बात नहीं कह रहा बल्कि बदलने की इच्छा के समाप्त होने की बात कर रहा हूँ, जिसका तात्पर्य यह नहीं है कि जो कुछ भी है उससे संतुष्ट रहा जाए। यह आवश्यक है कि ज्ञात को उस अज्ञात में बदलने की इच्छा का अंत हो जाए जो यद्यपि ज्ञात ही है, मैं उसे अज्ञात समझ रहा हूँ। यदि यह गतिविधि रुक जाती है तो एक सर्वथा भिन्न गतिविधि की शुरुआत होती है।

१५ जनवरी, १९५४